॥ श्री बजरंग बाण ॥

दोहा :
निश्चय प्रेम प्रतीति ते, बिनय करैं सनमान ।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान ॥
चौपाई :
जय हनुमंत संत हितकारी ।सुन लीजै प्रभु अरज हमारी ॥
जन के काज बिलंब न कीजै ।आतुर दौरि महा सुख दीजै ॥
जैसे कूदि सिंधु महिपारा ।सुरसा बदन पैठि बिस्तारा ॥
आगे जाय लंकिनी रोका ।मारेहु लात गई सुरलोका ॥
जाय बिभीषन को सुख दीन्हा ।सीता निरखि परमपद लीन्हा ॥
बाग उजारि सिंधु महँ बोरा ।अति आतुर जमकातर तोरा ॥
अक्षय कुमार मारि संहारा ।लूम लपेटि लंक को जारा ॥
लाह समान लंक जरि गई ।जय जय धुनि सुरपुर नभ भई ॥
अब बिलंब केहि कारन स्वामी ।कृपा करहु उर अंतरयामी ॥
जय जय लखन प्रान के दाता ।आतुर ह्वै दुख करहु निपाता ॥
जै हनुमान जयति बल-सागर ।सुर-समूह-समरथ भट-नागर ॥
ॐ हनु हनु हनु हनुमंत हठीले ।बैरिहि मारू बज्र की कीले ॥
ॐ ह्नीं ह्नीं ह्नीं हनुमंत कपीसा ।ॐ हुं हुं हुं हनु अरि
उर सीसा ॥
जय अंजनि कुमार बलवंता ।शंकरसुवन बीर हनुमंता ॥
बदन कराल काल-कुल-घालक ।राम सहाय सदा प्रतिपालक ॥
भूत, प्रेत, पिसाच निसाचर ।अगिन बेताल काल मारी मर ॥
इन्हें मारू, तोहि सपथ राम की ।राखु नाथ मरजाद नाम की ॥
सत्य होहु हरि सपथ पाइ कै ।राम दूत धरू मारू धाइ कै ॥
जय जय जय हनुमंत अगाधा ।दुख पावत जन केहि अपराधा ॥
पूजा जप तप नेम अचारा ।नहिं जानत कछु दास तुम्हारा ॥
बन उपबन मग गिरि गृह माहीं ।तुम्हरे बल हौं डरपत नाहीं ॥
जनकसुता हरि दास कहावौ ।ताकी सपथ बिलंब न लावौ ॥
जै जै जै धुनि होत अकासा ।सुमिरत होय दुसह दुख नासा ॥
चरन पकरि, कर जोरि मनावौं ।यहि औसर अब केहि गोहरावौं ॥
उठु, उठु, चलु, तोहि राम दुहाई ।पायँ परौं, कर जोरि मनाई ॥
ॐ चं चं चं चं चपल चलंता ।ॐ हनु हनु हनु हनु
हनुमंता ॥

ॐ हं हं हाँक देत कपि चंचल । ॐ सं सं सहमि पराने
खल-दल ॥
अपने जन को तुरत उबारौ । सुमिरत होय आनंद हमारौ ॥
यह बजरंग-बाण जेहि मारै । ताहि कहौ फिरि कवन उबारै ॥
पाठ करै बजरंग-बाण की । हनुमत रक्षा करै प्रान की ॥
यह बजरंग बाण जो जापैं । तासों भूत-प्रेत सब कापंऐ ॥
धूप देय जो जपै हमेसा । ताके तन नहिं रहै कलेसा ॥
दोहाः
उर प्रतीति दृढ़, सरन ह्वै, पाठ करै धरि ध्यान ।
बाधा सब हर, करैं सब काम सफल हनुमान ॥

Visit http://www.webdunia.com for additional texts with Hindi meanings.

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com
Last updated November 22, 2001